12 अंग

— मूल जैन साहित्य

— महावीर वाणी है इसलिए देन महावीर की

— रचनाकाल - महावीर का काल (6 वीं) वी शताब्दी ई०पू०
यह कब वर्गीकृत हुआ।
द्वितीय जैन महासम्मेलन के अवसर पर संघ समस्त मूल जैन साहित्य वर्गीकृत हुआ।

कब पुस्तकीय रूप दिया गया
Second Jain Council के अवसर पर संघ समस्त साहित्य को पुस्तकीय रूप दिया जा रहा था इसे भी पुस्तकीय रूप दिया गया।

इसकी भाषा क्या - प्राकृत
समस्त मूल जैन साहित्य की भाषा प्राकृत है।
संख्या कितनी - 12

क्या सब उपलब्ध नहीं, 1 लुप्त है
इसलिए मात्र 11 उपलब्ध है
उत जितने अंग उतने ही उपांग

— इसमें है क्या?
इसमें नियम है. किनके लिए - जैन धर्म को मानने वाले सक्रिय सदस्य के लिए rules है। सक्रिय कहने का अर्थ है वे लोग जो जैन धर्म, प्रचार के लिए घर छोड़ते है जो भिक्षु जीवन को अपनाते है वही सक्रिय सदस्य है।
यदि पुरुष ऐसा करते है, वे कहलाएंगे भिक्षु या श्रमण।
जैन भिक्षु, जैन श्रमण

यदि महिला ऐसा करती है, वे भिक्षुणि

सदस्या बनती हैं वे कहलाएगी -
जैन भिक्षुणी, जैन श्रमणी

जो घर का त्याग नहीं करके गृहस्थ जीवन जीते हुए भी जैन धर्म को अपनाते हैं, वे कहलाएँगे - जैन उपासक (पुरुष)
जैन उपासिका (महिला)

इसलिए जैन धर्म को मानने वाले लोगों के दो वर्ग -

1. सामान्य सदस्य - उपासक, उपासिका
2. सक्रिय सदस्य - भिक्षु, भिक्षुणी या श्रमण, श्रमणी

इसलिए महावीर ने सक्रिय सदस्यों के लिए, या organisation में शामिल होने वाले सदस्यों के लिए या भिक्षु - भिक्षुणी के लिए या संघ जीवन जीने के लिए कुछ नियम उपांग में है इसलिए उपांग को कहा गया है नियम पुस्तिका | Rule Book यह |

वैदिक धर्म के Rule - ब्राह्मण में

क्या समस्त 12 उपांग इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं - NO
धर्म की दृष्टि से सभी महत्वपूर्ण हो सकते हैं लेकिन इतिहास की दृष्टि से सबकी समान महत्ता नहीं। इनमें कुछ की विशिष्ट महत्ता है

1. जीवाभिगम

- 12 उपांग में एक
- इसी में मुख्य 212 नियम हैं जिनपर श्रमण - श्रमणियों को चलना था जो Assencial rules हैं। 5 MS

2. सूर्य प्रज्ञप्ति

- 12 उपांग में एक
- इसमें भी Rule ही है
- प्रसिद्धि का एक कारण - इसमें ज्योतिष विज्ञान की चर्चा है

यानि भिन्न-2 ग्रह-नक्षत्र कैसे मनुष्य पर असर डालते हैं। इसमें बताया गया है

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति

- 12 उपांग में एक
- Rule Book है

अतिरिक्त महत्व - इसमें उत्तर भारत का भौगोलिक विवरण है वह भी महावीर युग में उत्तर के नदी, पर्वत, पठार इन सबको क्या बोला जाता था, किन-2 नामों से जाना जाता था। बताया गया है

कल्पनावतंसिका

- 12 उपांग में एक

Rule Book है

इतिहास में महत्व के पीछे कारण अलग- महावीर ने अपने युग से मगध पर शासन करने वाले दो समकालीन शासक का उल्लेख किया है।

(1) बिंबीसार - हर्यक वंश

(2) अजातशत्रु - हर्यक वंश

ये दोनों हर्यक वंश के सबसे विख्यात शासक रहे हैं। महावीर के समकालीन रहे हैं महावीर एक को श्रेणिक (बिंबीसार), अजातशत्रु को कुणिक

"महावीर उवाच"

वे कहते हैं - "बिंबीसार (श्रेणिक) जैन मतावलंबी था और जैन धर्म की प्रगति में भूमिका निभाई थी।

उसका पुत्र अजातशत्रु पितृहंता हुआ। सत्ता पर वह कब्जा जमा लिया और धीरे-2 वह बौद्ध धर्म में चला गया इसलिए अजातशत्रु और बिंबीसार की चर्चा की वजह से इस literature की महत्ता बढ़ गई।"

इसलिए उपांग में चार विशेष रूप से पाए रखे जाने योग्य हैं-

1. जीवाभिगम - 272 rules की वजह से
2. सूर्यप्रज्ञप्ति - ज्योतिष विज्ञान की चर्चा
3. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति - भौगोलिक विवरण की चर्चा की वजह
4. कल्पनावंतसिका - बिंबीसार, अजातशत्रु की चर्चा की वजह से

10 प्रकीर्ण

मूल जैन साहित्य महावीर वाणी है। महावीर की देन है

रचनाकाल वही जो महावीर का काल है

कब वर्गीकृत - second council की अवसर पर

कब पुस्तकीय रूप - Second council अवसर

आज उपलब्ध है - Yes

संख्या - 10, 10 उपलब्ध भी

विषय है क्या - सिद्धांत है, दर्शन है, अध्यात्म है।